लाखों सलाम तुम पर

महबूबे रब्बे अकरम ! लाखों सलाम तुम पर
लाखों दुरूद हर दम लाखों सलाम तुम पर
तुम ह़ाकिमे ज़मां हो, सुल्त़ाने दो जहां हो
ऐ सरवरे मुअ़ज़्ज़म लाखों सलाम तुम पर
प्यारे नबी ! शफ़ाअ़त, की भीक हो इ़नायत
रह़मत हो जाने आ़लम लाखों सलाम तुम पर
दिल में तुम्हारी उल्फ़त, है दे दो इस में बरकत
हरगिज़ न हो कभी कम, लाखों सलाम तुम पर
ऐ वालिये मदीना बुलवाइये मदीना
काश आ के येह पढ़ें हम लाखों सलाम तुम पर
या मुस्त़फ़ा ! करम हो जिस दम लबों पे दम हो
कलिमा पढ़ूं मैं उस दम लाखों सलाम तुम पर
सरकार ! हो इ़नायत दीदार हो इ़नायत
जल्वों पे मर मिटें हम लाखों सलाम तुम पर
इ़श्क़ अपना दे दो मुझ को उन के तुफ़ैल में जो
मेरे हैं ग़ौसे आ'ज़म लाखों सलाम तुम पर
शैत़ानो नफ़्स हाए ! बरबाद करने आए
फ़रियाद ! शाहे आ़लम ! लाखों सलाम तुम पर
रन्जो अलम ने मारा लिल्लाह दो सहारा
आक़ा ! शफ़ीए़ आ'ज़म लाखों सलाम तुम पर
दुन्या के ग़म मिटा दो, उ़क़्बा के ग़म मिटा दो
कर दो ग़मों से बे ग़म लाखों सलाम तुम पर
मुरझाया दिल खिल उठे दे दो रज़ा के सदक़े
दाग़े जिगर का मरहम लाखों सलाम तुम पर
रह़मत हो या नबी अब हों ख़त्म नफ़्रतें सब
सुन्नी हों सब मुनज़्ज़म लाखों सलाम तुम पर

अ़त्त़ार को ख़ुदा ने, बख़्शा तुम्हारे सदक़े
था लाइक़े जहन्नम लाखों सलाम तुम पर

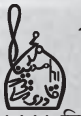

। अल मौत ।

1, रजब 1441 सि.हि.
26-02-2020